REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 6 | MARCH - 2024

हरिकृष्ण देवसरे की बाल कविताओं का अध्ययन

डॉ. लक्ष्मी कान्त मिश्रा
हिन्दी विभाग , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

रूढ़ियों में जकड़े हमारे समाज में बच्चे ऐसी इकाई थे, जिन्हें 'ठोंक–पीट' कर और 'डांट–डपट' कर 'आज्ञाकारी बालक' बनाना परिवार का प्रथम कर्त्तव्य समझा जाता था। सामंती विचारधारा में निमग्न उस तत्कालीन समाज में अगर बच्चों के लिए साहित्य के नाम पर कुछ था, तो सिर्फ धार्मिक नीतिकथाएं और उपदेशात्मक लोक कथाएं। लेकिन जैसे–जैसे समाज में आधुनिकताबोध का प्रसार हुआ, वैसे–वैसे न सिर्फ बच्चों के स्वतंत्र अस्तित्व को प्रबुद्धजनों ने स्वीकारा, वरन् उनके लिए आधुनिक मूल्य–बोध से सम्पन्न साहित्य की आवश्यकता भी महसूस की जाने लगी। पराग के नेतृत्व में प्रारम्भ हुए इस वैचारिक आह्वान को आंदोलन का रूप देने में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे का प्रमुख योगदान है।

मुख्य शब्द – डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, समाज, बच्चे एवं बाल कविताएँ।

प्रस्तावना –

जीवन को करीब से रहकर जीने वाले और सामाजिक विद्रूपताओं का बचपन से साक्षात्कार करने वाले डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने अपने कटु अनुभवों से यह सहज ही जान लिया था कि सामंती शक्तियां येन–केन–प्रकारेण आज भी समाज को अपना गुलाम बनाए रखना चाहती हैं। इसलिए ये शक्तियां धर्म और संस्कृति के नाम पर समाज में आडम्बरों, जादू–टोने, तंत्र–मंत्र और परीकथाओं को बढ़ावा देती हैं ताकि आमजन अपने चारों ओर पसरी समस्याओं की तह तक न पहुंच सकें। अपनी दुर्दशा के लिए वे अपने भाग्य को कोसें और उनके निराकरण के लिए चमत्कारों की आस जोहने को ही अपनी नियति मानें। बच्चों को मायावी फंतासी के इस दुष्चक्र से निकालने के लिए डॉ. देवसरे ने न सिर्फ 'पराग' के माध्यम से रचनाकारों को प्रेरित किया, वरन् स्वयं भी वैज्ञानिक चेतना से सम्पन्न साहित्य की रचना करके साहित्यकारों के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। देवसरे जी का रचनाकर्म व्यापक है। उन्होंने बालकहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, समीक्षा, अनुवाद, लेख, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज तथा अन्यान्य बालोपयोगी पुस्तकों की रचना की है।

हरिकृष्ण देवसरे ने बालसाहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कविता के माध्यम से किया। आरम्भ में उनके दो कविता संग्रह भी आए 'सफेद रसगुल्ले' और 'गुब्बारे'। दोनों को बच्चों ने खूब पसंद किया। यह चमत्कार से कम नहीं था कि उनके दोनों कविता संग्रह पुरस्कृत भी हुए। 'सफेद रसगुल्ले' को विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा और 'गुब्बारे' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साहित्य के नवागंतुक के लिए पहली पुस्तक का ही पुरस्कृत हो जाना कम गौरवशाली नहीं था।

हरिकृष्ण देवसरे जी का हिन्दी के बाल कवियों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक बाल कविताएँ लिखी। यहाँ उन्होंने बच्चों के लिए समय के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि समय वह अमूल्य क्षण है जो एक बार निकल जाए तो दुबारा नहीं आता और जो बच्चे समय के महत्व को नहीं जानते

हैं वो जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते हैं क्योंकि कहा भी गया है कि समय चूक फिर क्या पछताने अर्थात समय निकल जाने पर केवल पछताने के अलावा कुछ नहीं बचता है। इसलिए बच्चे समय के महत्व को समझें और एक क्षण भी बर्बाद न करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होकर मंजिल प्राप्त करें। समय के इसी महत्व को बतलाते हुए ''समय'' शीर्षक बाल कविता बच्चों को सही संदेश देती हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की कमर में भी एक घड़ी हर दम लटकती रहती थी। उन्हें एक क्षण की बर्वादी भी मन में खटकती रहती थी उनका संदेश था कि बच्चों तुम भी एक–एक क्षण का भरपूर लाभ उठाओ और समय व्यर्थ न गवाते हुए एक–एक क्षण का नियम बनाओ। इसी आस्था और विश्वास की प्रेरणा प्रदान करती हुई यह बाल कविता देखिये –

''रहती थी बापू की कटि में,
हर दम घड़ी लटकती।
उन्हें एक क्षण की बर्बादी,
भी अत्यधिक खटकती।
बच्चों तुम भी उसी भांति,
पल–पल से लाभ उठाओ,
व्यर्थ न जाए कभी एक क्षण,
ऐसा नियम बनाओ।''[1]

बच्चों में भावनाओं और आस्थाओं का असीम भंडार होता है वह आस्था माता–पिता, गुरू, परिवार, समाज एवं राष्ट्र आदि किसी के भी प्रति हो सकती है। राष्ट्र या देश के प्रति बच्चों में आस्था स्वाभाविक ही होती है क्योंकि इसी माटी में हम खेले कूदे और बड़े हुए हैं। इन्हीं आस्था और विश्वास की लड़ियों को जोड़ते हुए बाल साहित्यकार की ओजस्वी बाल कविता ''देखो देश बुलाता है'' बच्चों में उमंग और जोश का संचार करती है –

''सीमा पर अड़ जाने को,
मंगल तिलक लगाने को,
देखो ! देश बुलाता है।
देर जरा भी करो नहीं,
तूफानों से डरो नहीं,
दुश्मन से भिड़ जाने को,
नया हौसला लाने को,
देखो ! देश बुलाता है।''[2]

वीरता भरे गीत जहाँ उनमें रोमांच का भाव जगाते हैं, वहीं परियों का सुमधुर संगीत उनके कानों में गूंजता रहता है, अधूरी कही हुई कहानियां उनमें सपनों का निर्माण करती हैं। इन सबको बच्चे बहुत पसंद करते हैं। कविता में बालक की कल्पना उसके ज्ञान की सीमा पार करके आगे निकल जाती है, उसके भाव उसे इतनी दूर ले जाते हैं जहां उसके ज्ञान की पहुंच नहीं होती–उसे तो केवल आनंद चाहिए। कविताओं के स्वरों की यह विशेषता होती है कि वे श्रोता बालक के मन में आनन्द का संचार करते हैं।

विश्लेषण –

डॉ. देवसरे को बच्चों के लिए कविताएँ लिखने की प्रेरणा सरस्वती पत्रिका के माध्यम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने दी थी। उन्हीं के शब्दों में – ''बच्चों की रुचि के अनुकूल काव्य–रचना की ओर ध्यान कम था। उस समय हिन्दी (खड़ी बोली) अपना स्वरूप निश्चित कर रही थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से अनेक लेखकों को साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएं लिखने की प्रेरणा दी थी। उन्होंने स्वयं भी रचनाएं लिखीं और खड़ी बोली का स्वरूप निर्मित करने में योगदान किया।''[3] देवसरे का कथन है कि – ''शिशु और 'बालसखा' के प्रकाशन से बच्चों की कविताओं में ताजगी आई। विषयवस्तु, भाषा तथा

अभिव्यक्ति के माध्यम से परिवर्तन आया। रामनरेश त्रिपाठी, 'स्वर्ण सहोदर', श्रीनाथसिंह, आरसीप्रसाद सिंह, केशवप्रसाद पाठक आदि ने बच्चों की भावनाओं के अनुकल रचनाएं लिखीं। 'चंदामामा' में बालक की सहज अनुभूति को व्यक्त किया गया– एक सुंदर रूपक के माध्यम से। 'नटखट हम' में बच्चों की सहज स्वीकारोक्ति को प्रस्तुत किया गया तो साथ ही 'नन्हें हाथों' की शक्ति पर विश्वास भी प्रकट किया गया। स्वतंत्रता का मूल्य समझाने के लिए पूछा गया : 'कौन तुम्हें अच्छा लगता है'– 'बंदी तोता' या 'मुक्त तोता'। बालमन की कोमल अनुभूतियों को छूकर लिखा गया 'माता को पत्र' में आश्वासन है, आग्रह है और मां के प्रति सहज प्रेम की अभिव्यक्ति है। इन कविताओं में गेयता है, अभिनेयता है और बच्चों का अपना संसार है।''[4]

स्वातंत्र्योत्तर काल में, बच्चों की बदलती रुचियों, उनके प्रिय पात्रों–खिलौनों, पशु–पक्षियों, वस्तुओं आदि के प्रति उनके सामयिक परिवेश से जुड़े विचारों को कविताओं में अभिव्यक्ति प्रदान करने के प्रयोग कई कवियों ने किए। डॉ. देवसरे तथा विभा देवसरे की कविताओं ने अपनी प्रयोग धर्मिता के कारण बहुत लोकप्रियता प्राप्त की। बच्चों के सहगान लिखने की दिशा में भी कई प्रयोग हुए। योगेन्द्रकुमार लल्ला ने 'प्रतिनिधि बाल–सामूहिक गान' पुस्तक संपादित की थी और बच्चों के लिए सुन्दर गीत प्रस्तुत किए थे। सामूहिक रूप से गाए जाने वाले गीतों का एक निश्चित महत्व होता है। इनसे बच्चों में एकता और सहयोग की भावनाएँ उभरती हैं। 'हम नन्हें–नन्हें बच्चे हैं', 'हम मनमोहन, हम गोपाल', 'काम करेंगे', 'हम चलेंगे–हम चलेंगे' ऐसी ही रचनाएँ हैं।

सातवें दशक में बच्चों के लिए नए गीत लिखने का नया दौर शुरू हुआ। इन गीतों में भाषा, छंद और प्रतीकों तथा उपमानों सम्बन्धी प्रयोग किए गए। साथ ही उनमें सामयिक परिवेश तथा जीवनमूल्यों को भी प्रतिबिम्बित किया गया। बच्चों में नए जीवनादर्शों को स्थापित करने का प्रयास किया गया और आधुनिकताबोध से उन्हें जोड़ा गया। अपने आधुनिक जीवन के प्रति बच्चों की जिज्ञासाओं–समस्याओं और विचारों को भी इन कविताओं में स्थान दिया गया। 'कविवर तोंदूराम बुदक्कड़ इसी कोटि की कविता है।

डॉ. देवसरे ने बच्चों के लिए आत्मविश्वास की अनोखी कविताएँ रची जो बच्चों के बालमन पर गहरा प्रभाव डाल सकें जिससे प्रेरणा पाकर बच्चे पूर्ण जोश और चातुर्यता के साथ पूर्ण लग्न से सफलता की ऊँचाइयों को छुएं। उनमें भय नाम का कोई शब्द न हो और वे निडर होकर आगे बढ़ें। इस प्रकार की बाल कविताएं बच्चों में लक्ष्य के प्रति उत्सुकता और कर्तव्य निष्ठा को जन्म देकर मंज़िल तक पहुँचाती हैं, क्योंकि बालमन अत्यन्त भोला और सच्चा होता है। उस पर जैसा प्रभाव पड़ जाता है उसकी मानसिक स्थिति उतनी मजबूत हो जाती है यदि यही विश्वास उसका कमजोर हो जाए तो वह लक्ष्य से विचलित हो जाता है, भटक जाता है उसके मन में संकीर्णता पैदा हो जाती है, जिससे वह निराश होकर कभी लक्ष्य को हासिल ही नहीं कर सकता जो उसके जीवन को नीरस बना देता है। जो समाज व परिवार के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र के लिए भी अवनति का कारण बनता है।

हिन्दी बाल कविता साहित्य की एक ऐसी विधा है यदि उसमें हास्य नहीं है तो वह बच्चों में आकर्षण पैदा नहीं कर सकती और यदि आकर्षण पैदा नहीं कर सकती तो वह बच्चों की स्मरण शक्ति में अपना स्थान नहीं बना सकती, जिसके अभाव में दी गई जानकारी निरर्थक है। बच्चे सामान्यतः अचंभा एवं अचरज भरे दृश्य देखकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और वही दृश्य उनके मन में चित्त में स्थायी बन जाते हैं। चूँकि बच्चों की स्मरण शक्ति तो तेज होती ही है, उन्हें जो भी ज्ञानवर्धक बाल कविताएँ हास्य का पुट लिए होती हैं, उन्हें आकर्षित कर उनको प्रेरणा देकर एक नयी चेतना का संचार करती हैं। डॉ. देवसरे ने ऐसी ही अनेक बाल रचनाओं का सृजन किया है जो ज्ञानवर्धक के साथ हास्य से परिपूर्ण हैं। इसी हास्य भाव को दृष्टि में रखते हुए डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जी ने अपनी कविताओं का सृजन कर बच्चों में हास्य और मनोरंजन की प्रवृत्ति को बलवती बनाने का भरपूर प्रयास किया है –

''कंधे पर लाठी बेचारी, लटका उसमें पोथा भारी,
लिए हाथ में सुंधनी प्यारी।।
सूंघ सूंघकर आ छी आ छी से आनन्द उठाते हैं।
पक्के नियमी, धर्म धुरंधर, गायक गुप–चुप भांड उजागर,
परम स्वतंत्रा न नौकर–चाकर।
झूम झूमकर लटक–मटककर, हलुवा–पूड़ी खाते हैं।

लड़के उन्हें देख पछियाते, 'आए तोंदू' शोर मचाते,
घेर–घार कर घर ले आते,
हंसते रहते किन्तु बुदक्कड़, कभी नहीं खिसियाते हैं।
जहां कहीं जम जाता आसन, करके छिकनी का आवाहन,
अपना महाग्रंथ 'भांड़ायन',
उछल–कूदकर लटक–मटक कर, घंटों खूब हंसाते हैं।''[5]

प्रकाश मनु ने सन् 2003 में 'हिन्दी बाल कविता का इतिहास' लिखकर इसके अन्तर्गत वे देवसरे जी की दो कविताओं का जिक्र इस प्रकार करते हैं – बाल साहित्य में अपने ढंग से काफी महत्वपूर्ण काम कर रहे हरिकृष्ण देवसरे (ज. 1940, नागौद, जिला सतना) ने बच्चों के लिए गद्य ज्यादा लिखा है, लेकिन शुरू–शुरू में कविताएँ भी उन्होंने लिखीं। 'बापू के बंदर' और 'पगड़ी से टोपी' देवसरे की अच्छी कविताएँ हैं। इनमें 'पगड़ी से टोपी' में गांधी जी से एक सेठ की मुलाकात का दिलचस्प प्रसंग हैं जिसे चुस्त काव्यात्मक अंदाज दिया गया है। 'बापू के बंदर' कविता बाबू की सीख को ही दोहराती है –

बापू के ये बंदर तीन, देते हमको सीख नवीन।
मुँह को ढाँके बैठा एक, टेके चुप रहने की टेक।
कहता कभी न बोलो झूठ, दुनिया जाए भले ही रूठ।
मूँदे हुए दूसरा कान, उसका भी उपदेश महान।
कहना परनिंदा की बात, सुनो न कानों से तुम भ्रात।

हरिकृष्ण देवसरे में हास्य की विलक्षण प्रतिभा है और वह उनकी कुछ कविताओं में भी उभर आई है। उनकी यह कविता चर्चित हुई है –

''कविवर तोंदूराम बुदक्कड़ कभी कभी आ जाते हैं।
खड़ी निरंतर रहती चोटी, आंखें धंसी, मिचमिची छोटी,
नाक चायदानी की टोंटी।
अंग अंग की छटा निराली, भारी तोंद हिलाते हैं।
कंधे पर लाठी बेचारी, लटका उसमें पोथा भारी,
लिए हाथ में सुघनी प्यारी,
सूँघ–सूँघकर आछीं–आछीं का आनंद उठाते हैं ।''[6]

हालाँकि यहाँ यह टिप्पणी गैरमौजूँ न होगी कि 'नाक चायदानी की टोंटी' जैसी मजेदार कल्पना के बावजूद कहीं न कहीं इस कविता में 'पुरानापन' है। शारीरिक विकृतियों पर हँसना कम से कम आज हमें सुरुचिपूर्ण नहीं लगता।

अच्छे बच्चों का आदर्श प्रकट करते हुए बाल साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे इस कविता ''बच्चे'' में – अच्छे और बुरे बच्चों में अन्तर बतलाते हुए लिखते हैं कि अच्छे बच्चे फूलों जैसे, हंसते गाते, कभी न लड़ते, केवल लिखते–पढ़ते मेहनती होते एवं हीरो होते हैं। जबकि बुरे बच्चे काँटों की तरह, झगड़ते आलसी होते, शोर मचाते, कभी न पढ़ते एवं जीरो बनकर रहते हैं, उनकी ये पंक्तियाँ बड़ी दृष्टव्य है –

''अच्छे बच्चे फूलों जैसे
गंदे बच्चे शूलों जैसे
गंदे बच्चे शोर मचाते
अच्छे बच्चे मिलकर रहते
अच्छे बच्चे कभी न लड़ते

गंदे बच्चे सदा बिगड़ते।''[7]

बच्चों में पुरानी आस्थाओं के प्रति अब लगाव कम हो रहा है। आधुनिक समय में नवीन पीढ़ी कुछ नया करने की ललक रखती है। उन्हें विश्वास है कि हम नए युग की एक नई किरण है। हम एक नया कार्य करते हुए नये आविष्कारों को जन्म देकर नए सृजन करें। हम नवीन वैज्ञानिक तरीकों वाले नए उजाले भरने का प्रयास करें। संसार के दृष्टि पटल पर जो परिवर्तन हो रहे हैं हम ही उसकी नई चिंगारी हैं। इस कविता में उक्त भावचित्र अवलोकनीय है –

''बाधाओं से जो डरते हैं,
पीछे ही रह जाते हैं,
जो साहस से आगे बढ़ते,
वही लक्ष्य को पाते हैं।''[8]

आज हम नई सदी के द्वार पर खड़े हुए हैं। हमारे इरादे भी बड़े–बड़े हैं। आज के वर्तमान दौर में हम एक नई शक्ति का आत्मसात कर रहे हैं। सवाल चाहे देश की सुरक्षा का हो या देश के भीतर आंतरिक व्यवस्था का हो। हम पहरेदार बनकर सदैव सजग रहकर प्रत्येक क्षण देश की रक्षा में लगा देंगे हम वह नवीन जगृति की किरण है। बच्चों में इस नए विश्वास की किरण जाग्रत करने के लिए नये युग के पक्षधर डॉ. देवसरे जी ने इस बाल कविता ''नई किरण हम'' में लिखा है –

''नए जागरण, नई किरण हम,
नई प्रगति हम, नए सृजन हम।
वैज्ञानिक तकनीकों वाले,
हम ले आए उजाले।
विश्व दृश्य के परिवर्तन हम,
नए जागरण, नई किरण हम।
नई सदी के द्वार खड़े हम,
लिए इरादे बड़े–बड़े हम।
नई शक्ति कर रहे वरण हम,
नए जागरण, नई किरण हम।
प्रश्न देश की रक्षा का हो,
या आंतरिक सुरक्षा का हो,
प्रहरी सबल, सजग हर क्षण हम,
नए जागरण, नई किरण हम।''[9]

'लहसुन' के गुणों को उजागर कर बच्चों में एक सूचनात्मक जानकारी प्रस्तुत करने का कवि ने सफल प्रयास किया है। उन्होंने बाल कविता के माध्यम से बताया कि लहसुन बहुत गुणकारी होता है। यह रक्त को साफ करता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह सर्दियों का दुश्मन कहा जाता है जो भी व्यक्ति सर्दी में इसका सेवन करता है उसे कभी सर्दी नहीं लगती है। इसी प्रकार गर्मी की दवा का उल्लेख करते हुए प्याज को लोगों को लू से बचाने का सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया है और कहा है कि यह प्याज भोजन के साथ इस्तेमाल करने पर भोजन को पचाने में मदद करती है। इन्हीं विज्ञानपरक जानकारी से परिपूर्ण कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य है –

''लहसुन गुणकारी होता है,
खाओ खून साफ होता है।

सर्दी का तो दुश्मन है,
इसलिए प्रिय जन–जन है।।
प्याज दवा होती गर्मी की,
लू से हमें बचाती है।
खाना के संग सलाद में,
भोजन शीघ्र पचाती है।''[10]

आधुनिक गीतों में बच्चों के परिवेश और जीवन से जुड़ी बातों को प्रस्तुत करने का परिणाम यह हुआ है कि आज हिन्दी में बच्चों के लिए अनेक श्रेष्ठ रचनाएं उपलब्ध हैं और यदि तुलनात्मक दृष्टि से उनका विवेचन करें तो वे अंगरेजी बाल–कविताओं से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ सिद्ध होती हैं। इन कविताओं में वे चित्र है जिनको बच्चों ने आधुनिक संदर्भों में स्वयं निर्मित किया है– 'बंदर द्वारा राशन–कार्ड बनवाना', 'नई कहानी का गीत', 'नई प्रार्थना' आदि ऐसी ही रचनाएं हैं जो बच्चों को आधुनिक भावबोध से जोड़ती हैं। यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है और आज की बालकविता की प्रगति का एक स्मरणीय स्तम्भ है। वस्तुतः आज की बाल–कविताओं में न केवल उपमाएं और प्रतिमान बदले हैं बल्कि उनमें बच्चों का नया भावबोध भी अभिव्यक्त हुआ है, बच्चे अब हर वस्तु को आज के संदर्भ में, नए अर्थबोध और गुणों के अनुरूप देखने का प्रयत्न करते हैं। वे कोयल की कूक और उसके फुदकने में सीधा–सादा भाव न अनुभव करके, ऐसी कल्पना में अधिक रुचि लेते हैं जैसे कोयल अपना गाना रिकार्ड कराए। उन्हें कुत्ते का यों ही घूमना अच्छा नहीं लगता, किन्तु यदि वह ऐनक लगाकर, छड़ी घुमाता–पान चबाता घूमे तो वह अधिक आकर्षक लगेगा। बच्चों की कविताओं में यह बदलाव केवल उनके प्रिय पात्रों तक ही सीमित नहीं रहा है। समाजिक–पारिवारिक सम्बन्धों, त्यौहारों, मौसम आदि की कविताओं में भी नया स्वर मुखरित हुआ है। आज के वैज्ञानिक जीवन बदलते मूल्यों और परिवेशगत परिवर्तनों को आज की बालकविता में स्पष्ट देखा जा सकता है। बच्चे इनसे बड़ी सुगमता से जुड़ते हैं और अपनी बाल–सुलभ अभिव्यक्ति को मुखरित पाकर प्रसन्न होते हैं।''[11]

कविता लिखने के साथ–साथ हरिकृष्ण देवसरे के सम्पादन में 'बच्चों की 100 कविताएं' शीर्षक से एक पुस्तक आई, जिसमें आमुख में वे लिखते हैं कि – "बच्चों की कविताओं की इस लम्बी यात्रा के दौरान अनेक कवियों की पहचान भी बनी है। उसे रेखांकित करने के साथ–साथ उपलब्धियों के नए बिन्दुओं से परिचित कराने का उद्देश्य भी प्रस्तुत संकलन की रचनाओं में निहित है। निस्संदेह सौ कविताओं का चयन एक ऐसा कार्य है जिसमें एकमत होना संभव नहीं है। फिर भी बच्चों के जिन कवियों ने इस विधा को समृद्ध बनाया है, उनकी वे रचनाएं संकलन में ली गई हैं– जिन्हें बच्चों ने सराहा है और जिनमें उस कवि की रचनाधर्मिता और काव्यगत विशेषताओं का परिचय मिलता है।''[12]

डॉ. देवसरे ने अपने जीवन के साठ वर्ष बाल साहित्य सृजन में अर्पित किए हैं। उनका यह बाल रचना विषयक सृजन बाल्य काल के 8 वर्षों से ही आरम्भ हो गया था। डॉ. ओम प्रकाश कश्यप के शब्दों में –''डॉ. देवसरे ने भी बचपन में बालसाहित्य को पढ़ा और सदा के लिए इसमें रच–बस गए। बालसाहित्य के कलापक्ष पर उन्होंने ज्यादा जोर नहीं दिया। संभवतः जानबूझकर छोड़ दिया। बालसाहित्य के भीतर पैठने का प्रयास करते समय उन्होंने शायद पाया हो कि इस पक्ष पर लिखने वाले और भी बहुत हैं। स्वतंत्र राह चुनने की ललक में उन्होंने बालसाहित्य के उस पक्ष को पकड़ा जो लगभग अनचीन्हा पड़ा था। वह क्षेत्र था, समीक्षा का। बालसाहित्य के मूल्यांकन के लिए कसौटी तैयार करने का। कहानी, कविता के क्षेत्र में तो भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय से ही विपुल लेखन होता आया था। बाकी विधाएँ भी सर्वथा उपेक्षित न थी। इसके बावजूद समर्पित लेखकों की कमी थी। ऐसे लेखकों की कमी थी, जो खम ठोंककर कह सकें– हाँ, हम बालसाहित्यकार हैं। बालपाठकों के लिए लिखते हैं। हमारा सरोकार बच्चों से है। हम समाज का भविष्य रचते हैं।''[13]

हरिकृष्ण देवसरे बच्चों के लिए लिखना तो 1951 में प्रारम्भ कर चुके थे, लेकिन बालसाहित्य उनके सृजन–संसार का प्रमुख केन्द्र बना 1961 में। डॉ. देवसरे ने अनुभव किया कि स्वतंत्रता पूर्व, स्वातंत्र्योत्तर तथा आधुनिक युग में बाल कविताओं का साहित्य अत्यधिक रूपों में, विविध आयामों में सृजित हो चुका है। आज भी समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में बहुत कुछ लिखा जा रहा है। और भविष्य में भी लिखा जायेगा। इस सोच के साथ बाल कविताओं का संसार अत्यन्त व्यापक है। डॉ. देवसरे ने आदि काल से अब तक रचे हुए बाल साहित्य खास

रूप से बाल कविता संसार से संतुष्ट थे तथापि आंशिक रूप से बाल कविताओं का सृजन किया। बच्चों की सौ कविताओं का सम्पादन किया।''[14]

इस परिप्रेक्ष्य में यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि सन साठ के बाद बच्चे कविताओं से दूर हुए हैं या यों कहें कि कविताओं के प्रति बच्चों की रुचि कम हुई है। पुरानी कविताओं और विशेषकर नीति और सीख वाली कविताओं तथा सामान्य विचार वाली कविताओं को बच्चों ने अस्वीकार किया है। बिना छन्द की या विभिन्न शैलियों की कविताएँ लिखने के प्रयास भी हुए हैं और बच्चों ने उनका स्वागत किया है। 'कव्वाली' या 'पहाड़ा' शैली में कुछ कविताएं बच्चों ने बहुत पसंद की हैं। इस दिशा में अभी और भी प्रयोगों की संभावनाएं हैं और वे निश्चय ही बाल साहित्य की इस विधा की समृद्धि में सहायक होंगे।[15]

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जी का रचनाकर्म अत्यन्त विस्तृत है। उन्होंने बालकहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना, समीक्षा, अनुवाद, लेख, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज तथा अन्यान्य बालोपयोगी पुस्तकों की रचना की है। बालसाहित्य के क्षेत्र में उन्होंने पदार्पण कविता के माध्यम से किया था। आरम्भ में दो बालकविता संग्रह भी आए जो पुरस्कृत भी हुए। साहित्य के नवागंतुक के लिए पहली पुस्तक का ही पुरस्कृत हो जाना कम गौरवशाली नहीं था। कोई दूसरा होता तो कविता के क्षेत्र, जिसने पहली ही पुस्तक पर सम्मान दिलाया था, सदा के लिए रमा रहता। कभी छोड़कर नहीं जाता। लेकिन किसी एक जगह ठहर जाना, स्वयं को सीमित कर देना मानों उनका स्वभाव ही नहीं था। उन्हें लग रहा था कि कविता का क्षेत्र उनके लिए नहीं है। इसलिए समय रहते उन्होंने स्वयं को गद्य लेखन के प्रति समर्पित कर दिया। उसके बाद तो बालसाहित्य की ऐसी शायद ही कोई विधा हो, जिसको उनकी लेखनी ने समृद्ध न किया हो। अपने पाँच दशक से लम्बे सक्रिय लेखनकाल में बालोपयोगी साहित्य की रचना करते–करते वे बालसाहित्य के पर्याय बन चुके थे। बालसाहित्य का कोई भी विमर्श उनके बिना अधूरा है।

संदर्भ –

1. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बाल ज्योति, पृष्ठ 9
2. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – देश प्रेम के बाल गीत, पृष्ठ 24
3. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 5
4. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 7
5. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 135–136
6. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 135
7. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चे, पृष्ठ 14
8. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – साहस से आगे बढ़ो, पृष्ठ 26
9. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – नई किरण, पृष्ठ 13
10. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – लहसुन, पृष्ठ 23, प्याज, पृष्ठ 21
11. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 10
12. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 12
13. कश्यप, डॉ. ओमप्रकाश – हरिकृष्ण देवसरे का बाल साहित्य, पृष्ठ 80,
14. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 11
15. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण – बच्चों की 100 कविताएँ, पृष्ठ 11–12.